६. भूमि–उपयोग

करके देखो ।

- अपने घर का नक्शा बनाओ । बताओ कि इस नक्शे में नीचे दी गई व्यवस्थाएँ कहाँ–कहाँ स्थित हैं ।
- रसोई, पूजा घर , गुसलखाना, आंगन, बैठकखाना एवं शयनकक्ष ।
- नक्शा तैयार होने पर निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा करो ।

  (अ) प्रत्येक व्यवस्था का स्थान घर में निश्चित क्यों होता है ?

  (आ) यदि इन व्यवस्थाओं का स्थान निश्चित नहीं होगा तो क्या होगा ?

भौगोलिक स्पष्टीकरण

आपके यह ध्यान में आया होगा कि घर में प्रत्येक वस्तु का स्थान निश्चित होता है । यदि यह स्थान निश्चित न किया जाए तो घर अव्यवस्थित लगता है एवं घर में चहल–पहल करते समय बाधाएँ उत्पन्न होंगी ।

यदि इन वस्तुओं का स्थान बदल दिया जाय तो हमें कुछ दिनों तक परेशानी होती है । आपके घर में उपलब्ध भूमि स्थान का उपयोग विभिन्न व्यवस्थाओं के लिए किया जाता है ।

करके देखो ।

यह गतिविधि कक्षा में सबको मिल कर करनी है।

व्यावसायिक	निवासी क्षेत्र	खाली भूमि	मनोरंजन
उद्योग	परिवहन	कृषि	संस्था	मिश्र भूमि उपयोग

- ✓ उपरोक्त नामों के फलक तैयार करो । विद्यार्थी इन्हें हाथ में लेकर गोल बनाकर खड़े रहेंगे ।
- ✓ अब नीचे दिए गए शब्दों की पर्चियाँ तैयार करो एवं एक डिब्बे में रखो ।

  दुकान, बगीचा, बैंक, बर्तनों का कारख़ाना, विद्यालय, बंगला, निवासी इमारत, मॉल, हॉकी का मैदान, सिनेमाघर, अस्पताल, बस स्टाप, बंदरगाह, हवाई अड्डा, तरणताल, बैंडमिंटन कोर्ट, आरक्षित वन।

- ✓ प्रत्येक विद्यार्थी एक पर्ची उठाएगा और संबंधित फलक को लेकर खड़े विद्यार्थी के पीछे जाकर खड़ा हो जाएगा । यह गतिविधि पूर्ण होने पर निम्नांकित बिंदुओं पर चर्चा करो ।
- आपके द्वारा विशिष्ट फलक चुनने का कारण क्या था ?
- बताओ कि तुमने जिस भूमि का चयन किया उसका उपयोग किसके लिए करोगे ?
- हमारी आवश्यकताओं और भूमि उपयोग के बीच सहसंबंध पर विचार करो ।

भूमि–उपयोग :

भौगोलिक स्पष्टीकरण

भूमि उपयोग अर्थात किसी प्रदेश में भूमि के होनेवाले विभिन्न उपयोग । भूमि–उपयोग भौगोलिक कारकों और मानव के बीच होने वाली अंतरक्रियाओं से बनता है । समय के साथ भूमि के उपयोग में परिवर्तन होते हैं । जैसे–जैसे मानव की आवश्यकताओं में वृद्धि होती गई, वैसे–वैसे मानव द्वारा भूमि का उपयोग विभिन्न कारणों हेतु बढ़ता गया। खनिजों से युक्त भूमि पर खनन कार्य किया जाने लगा । उर्वर, समतल भूमि पर कृषि की जाने लगी इत्यादि ।

भूमि– उपयोग के प्रकार :

ग्रामीण भूमि उपयोग : ग्रामीण भागों में कृषि मुख्य व्यवसाय होता है । कृषि से संबंधित अन्य व्यवसाय भी ग्रामीण भागों में किए जाते हैं । इसका परिणाम ग्रामीण अधिवासों की अवस्थिति पर दिखाई देता है। इसीलिए ये अधिवास खेतों के पास, वनों के पास पाए जाते हैं । खानों के पास खान में काम करनेवाले मजदूरों के अधिवास पाए जाते हैं तो वहीं सागरीय तट के पास मछुआरों के अधिवास होते हैं । ग्रामीण भागों में भूमि अधिक उपलब्ध होती है और जनसंख्या कम होती है । इसीलिए जनसंख्या का घनत्व कम होता है । ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय क्षेत्र कम होता है । ग्रामीण भूमि के उपयोग का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जाता है : –

कृषि भूमि : वह भूमि जहाँ प्रत्यक्ष रूप से खेती की जा रही है। यह क्षेत्र सामान्यतया व्यक्तिगत स्वामित्व के अधीन होता है। भूमि के स्वामित्व एवं कृषि के प्रकारों के

आधार पर इस क्षेत्र का अधिक वर्गीकरण कर सकते हैं।

परती भूमि : वह कृषि योग्य भूमि जिसका फिलहाल कोई उपयोग नहीं किया जा रहा हो। भूमि की उर्वरता को बढ़ाने के लिए कृषक एक-दो मौसमों तक भूमि के कुछ भाग का उपयोग नहीं करते । ऐसी भूमि को परती भूमि कहते हैं ।

वन भूमि : ग्रामीण भूमि उपयोग में सीमांकित वन भी एक प्रकार का भूमि उपयोग है । इस वन क्षेत्र से लकड़ी, गोंद, घास इत्यादि वनोत्पाद प्राप्त होते हैं । इन वन के क्षेत्रों में मुख्यतः बड़े पेड़, झाड़ियाँ, लताएँ, घास इत्यादि होते हैं ।

चरागाह/मैदान : यह जमीन गाँव के पंचायत के अधीन होती है अथवा सरकार के अधीन होती है । पूर्ण गाँव इसका स्वामी होता है। थोड़ी जमीन ही निजी स्वामित्व के अधीन होती है।

नगरीय भूमि उपयोग : बींसवी सदी में नगरीय अधिवासों में वृद्धि हुई । नगरीय भागों में विभिन्न कामों हेतु भूमि का उपयोग किया जाता है । इसीलिए भूमि का अधिक से अधिक उपयोग करना आवश्यक है । नगरीय भागों में जनसंख्या की तुलना में भूमि सीमित होती है । इसीलिए जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है। नगरीय अधिवासों में भूमि उपयोग का वर्गीकरण निम्न प्रकारों में कर सकते हैं।

व्यावसायिक क्षेत्र : शहर का कुछ भाग केवल व्यवसाय हेतु उपयोग में लाया जाता है । इस भाग में दुकानें, बैंक, कार्यालयों का मुख्यतः समावेश होता है । केंद्रीय व्यावसायिक क्षेत्र (CBD) की कल्पना का जन्म यहीं से हुआ है । उदाहरणार्थ, मुंबई स्थित फोर्ट अथवा बीकेसी (बांद्रा- कुर्ला कॉम्प्लेक्स) ।

आवासीय क्षेत्र : इसमें जमीन का उपयोग लोगों के रहने के लिए किया जाता है। इस क्षेत्र में मकान, इमारतों का समावेश होता है। निवासियों की संख्या अधिक होने के कारण भूमि उपयोग के इस प्रकार का विस्तार नगरीय भाग में अधिक होता है।

यातायात क्षेत्र : शहरों में लोगों और माल को लाने ले-जाने के लिए यातायात व्यवस्था महत्वपूर्ण होती है। ऐसी व्यवस्था के व्यवस्थित संचालन हेतु शहर में विविध प्रकार की सुविधाएँ दी जाती हैं। उदाहरणार्थ, सार्वजनिक बस सेवा, रेल्वे, मेट्रो, मोनोरेल, यात्री कारें इत्यादि। साथ ही, निजी वाहनों की संख्या भी अधिक होती है । इन सब के लिए सड़कों, रेल्वे लाइनों, बसस्थानकों, पेट्रोल पंपों, वाहन तलों, मरम्मत केंद्रों की व्यवस्था आवश्यक होती है। ऐसी व्यवस्थाएँ यातायात क्षेत्र के अंतर्गत आती हैं।

सार्वजनिक सुविधा क्षेत्र : जनसंख्या की विविध आवश्यकताओं हेतु कुछ सुविधाएँ स्थानिक स्वशासन, राज्य सरकार या फिर केंद्र सरकार द्वारा दी जाती हैं। उदाहरणार्थ, अस्पताल, डाक सेवा, पुलिस चौकी, पुलिस मैदान, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय इत्यादि सुविधाएँ इस क्षेत्र के अंतर्गत आती हैं। यह क्षेत्र नगरीय भूमि उपयोग में बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है । बढ़ती हुई जनसंख्या का दबाव इन सेवा-सुविधाओं के कारण कम हो जाता है ।

देखो होता है क्या ?

अपने परिसर का नक्शा लो और विभिन्न रंगों का उपयोग कर अपने परिसर का भूमि उपयोग उस पर दिखाओ । योग्य पद्धति से सूची भी दो ।

मनोरंजन के क्षेत्र : नगर में रहने वाले लोगों के मनोरंजन हेतु कुछ भाग अलग से आरक्षित किए जाते हैं । ऐसे भागों का उपयोग मुख्यत: मैदानों, उद्यानों, जलतरण तालों, नाटक घरों इत्यादि के लिए किया जाता है ।

मिश्र भूमि उपयोग : कुछ भागों में उपरोक्त सभी प्रकार के भूमि उपयोग एकत्र दिखाई देते हैं । ऐसे भूमि पर मिश्र भूमि उपयोग होता है। उदाहरणार्थ, निवासी क्षेत्र एवं मनोरंजन क्षेत्र ।

मानचित्र में ऐसे भाग दिखाते समय विशेष रंगों का उपयोग करते हैं । निवासी-लाल, व्यावसायिक-नीला, कृषि-पीला, हरा-वनक्षेत्र

संक्रमण क्षेत्र एवं उपनगर :

नगरीय अधिवासों की सीमा से लग कर ग्रामीण अधिवास होते हैं । इन दोनों के बीच के क्षेत्र को संक्रमण प्रदेश अथवा ग्रामीण-नगरीय उपान्त के नाम से जाना जाता है । इसीलिए इस प्रदेश का भूमि उपयोग संमिश्र स्वरूप का होता है । साथ ही यहाँ का सांस्कृतिक जीवन भी मिश्र स्वरूप का होता है। यहाँ के भूमि उपयोग में ग्रामीण और

थोड़ा विचार करो ।

यदि भूमि परती है या खाली है तो क्या यह भी एक प्रकार का भूमि उपयोग ही है ?

नगरीय भूमि उपयोग का मिश्रण दिखाई देता है । समय के साथ इन भागों का नगरीकरण हो जाता है और मुख्य शहर के पास उपनगरों का निर्माण हो जाता है। उदाहरणार्थ, बांद्रा, भांडूप इत्यादि मुंबई के उपनगर हैं ।

योजनाबद्ध शहर : औद्योगिक क्रांति के पश्चात विश्व में बड़े पैमाने पर नगरीकरण की शुरुआत हुई । नगरीकरण की यह प्रक्रिया योजनाबद्ध नहीं थी और इसीलिए शहरों का अनियंत्रित विकास होने लगा । रोजगार के अवसरों के कारण बड़े पैमाने पर जनसंख्या का स्थानांतरण होने लगा । शहरों में स्थान की उपलब्धता का प्रश्न सदैव ही गंभीर होता है । नगरीय भूमि उपयोग में बड़े पैमाने पर विविधता दिखती है । भूमि सीमित होती है और भूमि उपयोग में विविधता होती है। साथ ही शहर बढ़ता रहता है। ऐसे में भविष्य का विचार करते हुए शहरों को योजनाबद्ध पद्धति से निर्माण करने का विचार शुरू हुआ। नगर के बसने के पहले ही उसमें भूमि उपयोग कैसा होगा इसका नियोजित मानचित्र तैयार होता है । उसके अनुसार शहरों का विकास किया जाता है । सिंगापुर, सियोल (दक्षिण कोरिया), ज्यूरिख (स्विट्ज़रलैंड), वाशिंगटन डी.सी., (संयुक्त राज्य अमरीका), ब्राज़ीलिया (ब्राज़ील), चंडीगढ़, भुवनेश्वर (भारत) इत्यादि योजनाबद्ध शहर हैं ।

बताओ तो !

आकृति ६.१ में भूमि उपयोग को दर्शाने वाले वृत्तारेखों का अभ्यास करें और उनके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो :

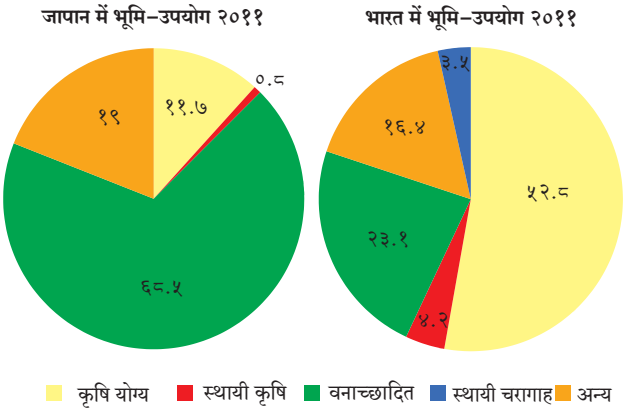

आकृति ६.१ जापान एवं भारत में भूमि उपयोग (%)

- किस देश में वनाच्छादित भूमि का प्रतिशत अधिक है ?
- कृषि के अंतर्गत भूमि का अनुपात किस देश में अधिक है?
- उपरोक्त दो प्रश्नों का विचार करते हुए भारत एवं जापान की प्राकृतिक संरचना एवं जलवायु का सहसंबंध कैसे जोड़ेंगे ?
- भूमि उपयोग एवं प्रादेशिक विकास का सहसंबंध ढूँढ़ो ।
- जापान में कौन-सा भूमि उपयोग पाया जाता है ?
- भूमि उपयोग का विचार करते हुए दोनों देशों में भूमि उपयोग पर परिणाम करने वाले कारकों की सूची बनाओ।

भौगोलिक स्पष्टीकरण

तुम्हारे ध्यान में आया होगा कि विविध देशों में भूमि उपयोग में विविधता दिखाई देती है । भूमि की उपलब्धता, देश की जनसंख्या, उसकी गुणवत्ता एवं आवश्यकतानुसार भूमि उपयोग के प्रकारों में अंतर दिखाई देता है । जैसे, जापान में वनाच्छादित भूमि का प्रमाण अधिक और कृषि के अधीन भूमि का प्रमाण बहुत ही कम है। उसकी तुलना में भारत में वनाच्छादित भूमि का प्रतिशत कम है और स्थायी कृषि के अंतर्गत भूमि का प्रतिशत अधिक है ।

किसी प्रदेश के भूमि उपयोग के अनुसार विकास का स्तर समझा जा सकता है ।

भूमि का स्वामित्व एवं स्वामित्व अधिकार :

बताओ तो !

- आकृति ६.२ एवं ६.३ में भूमि उपयोग किस प्रकार हेतु हुआ है?
- यह संपत्ति किस क्षेत्र की है?

भौगोलिक स्पष्टीकरण

७/१२ उतारा :

हमने देखा कि भूमि उपयोग के अंतर्गत भूमि का उपयोग कैसे होता है । भूमि का स्वामित्व निजी अथवा सरकारी हो सकता है । इस संबंध का पंजीकरण सरकार के राजस्व विभाग में किया जाता है। पंजीकृत भूमि की सभी जानकारी राजस्व विभाग के 'सातबारा' (खसरा) नामक दस्तावेज में देखने को मिलती है । इस संबंध में हम जानकारी लेंगे ।

'सातबारा' दस्तावेज के कारण भूमि-संबंधी स्वामित्व अधिकारों के विषय में पता चलता है । यह दस्तावेज शासकीय अभिलेख राजस्व विभाग द्वारा जारी

गाव नमुना सात

अधिकार अभिलेख पत्रक

(महाराष्ट्र जमीन महसूल अधिकार अभिलेख आणि नोंदवह्या (तयार करणे व सुस्थितीत ठेवणे) नियम, १९७१ यातील नियम ३, ५, ६ आणि ७)

गाव :- वडझिरे तालुका :- पारनेर जिल्हा :- अहमदनगर

गट क्रमांक व उपविभाग	भुधारणा पद्धती	भोगवटदाराचे नांव
757	भोगवटादार वर्ग -1	

शेतीचे स्थानिक नांव	क्षेत्र आकारआणे पै पो.ख. फे.फा	खाते क्रमांक
क्षेत्र एककहे.आर.चौ.मी जिरायत 2.10.00 बागायत - तरी - वरकस - इतर - ---------- ---------- एकुण क्षेत्र 2.10.00 ---------- ---------- पोटखराब (लागवडीस अयोग्य) वर्ग (अ) 0.02.00 वर्ग (ब) - एकुण पोख 0.02.00 ---------- ---------- आकारणी 1.12 ---------- ---------- जुडी किवा विशेष आकारणी -	[अशोक दत्तात्रय सुरुडे] (3947) [कैलास दत्तात्रय सूरुडे] (3947) [सुभाष दतू सूरुडे] (3947) प्रशांत परशुराम आहेर 1.05.00 0.56 0.01.00 (3947) सचिन परशुराम आहेर 1.05.00 0.56 0.01.00 (3947)	[60], [185], [1681], 2444, 4243 कुळाचे नाव इतर अधिकार इतर आप्पा पांडु याने 88 क चे सर्टिफीकेट मिळवणार (1) सो.इ.प.क.घे . 500 / - 27-6-73 (1) बोजा - सहकारी सोसायटी इकरार सो.इ.प.क.घे . (2038) इतर (3892) (3938) [इतर] (3939) [(3938)](3939) इतर बोजा सेंट्रल बँक ऑफ इंडिया शाखा-वडझिरे र.रु. 100000।- सुभाषचा हि. (5461) विहीर , वहीवाट हक्क सचिन आहेर व प्रशांत आहेर यांची एक सामाईक विहीर (5639)
	(1),(790),(1149),(2492),(3492),(3892),(3925),(3938),(3939),(4883),(5798)	सीमा आणि भुमापन चिन्हे

नमूनाप्रत

ttps://mahabhulekh.maharashtra.gov.in/Nashik/pg712_changes.aspx 1/2

गाव नमुना बारा

अधिकार अभिलेख पत्रक

(महाराष्ट्र जमीन महसूल अधिकार अभिलेख आणि नोंदवह्या (तयार करणे व सुस्थितीत ठेवणे) नियम,१९७१ यातील नियम २९)

गाव: वडझिरे तालुका: पारनेर जिल्हा: अहमदनगर

		पिकाखालील क्षेत्राचा तपशील								निर्भेळपिकाखालील लागवडीसाठी उपलब्ध नसलेली जमीन		जल सिंचनाचे साधन	शेरा
		मिश्र पिकाखालील क्षेत्र					निर्भेळ पिकाखालील क्षेत्र						
		मिश्रणाचा संकेत क्रमांक		घटक पिके व प्रत्येकाखालील क्षेत्र									
वर्ष	हंगाम	जल सिंचित	अजल सिंचित	पिकांचे नाव	जल सिंचित	अजल सिंचित	पिकांचे नाव	जल सिंचित	अजल सिंचित	स्वरूप	क्षेत्र		
2014-15	रब्बी						ज्वारी		2.1000				
	खरीप						बाजरी		2.1000				
2015-16	रब्बी						ज्वारी		2.1000				
2016-17	रब्बी						ज्वारी		2.1000				

सुचना : या संकेतस्थळावर दर्शविलेली माहिती ही कोणत्याही शासकीय अथवा कायदेशीर बाबींसाठी वापरता येणार नाही.

आकृति ६.२ : सातबारा उतारा (खसरा)

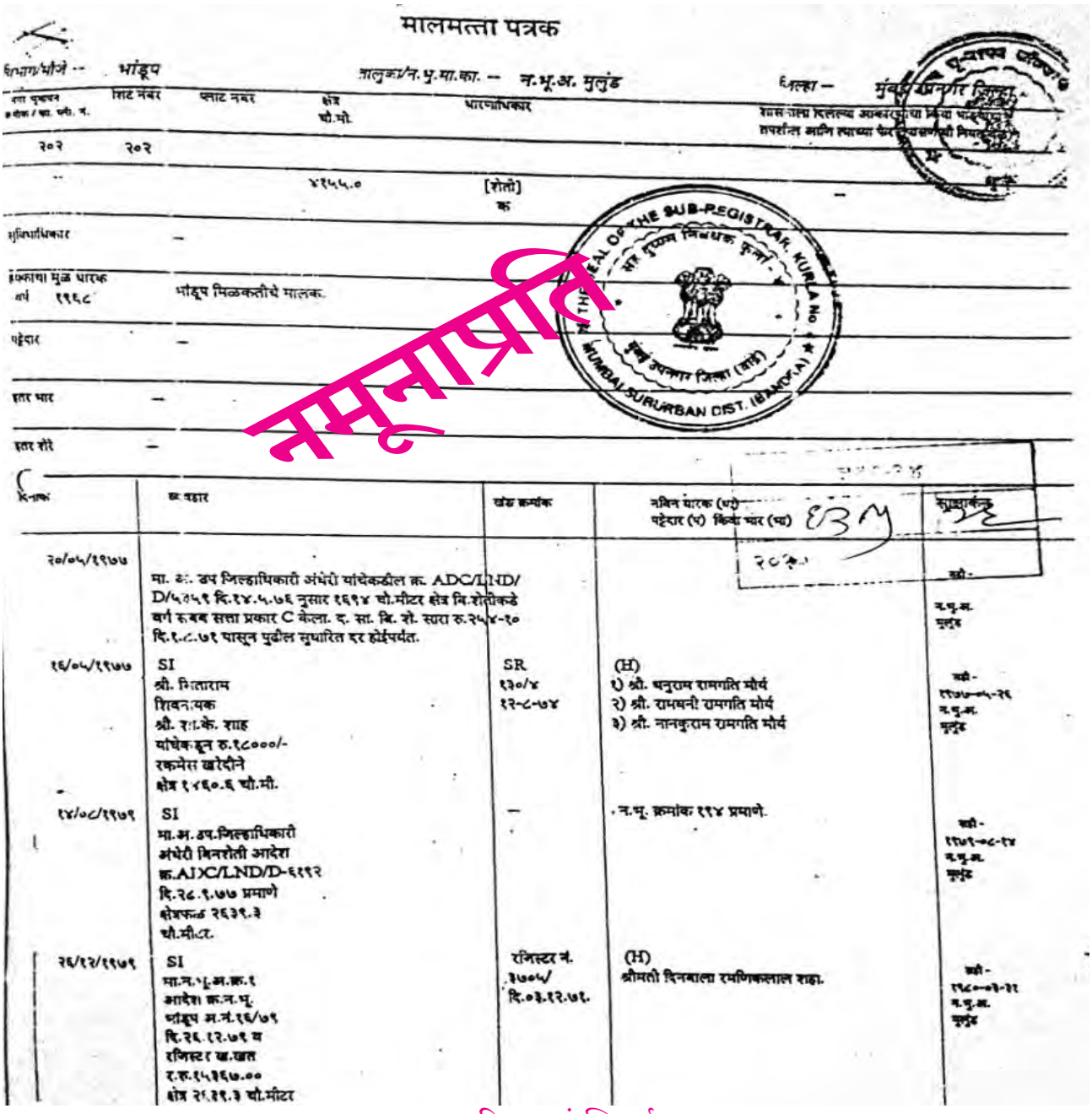

आकृति ६.३ : संपत्ति कार्ड

किया जाता है । स्वामित्व अधिकारों से संबंधित कानून में क्रमांक ७ एवं क्रमांक १२ विशेष अनुच्छेद हैं ।

एक प्रकार से 'सातबारा' को हम भूमि का दर्पण कह सकते हैं । प्रत्यक्ष उस भूमि पर न जाकर भी हमें उस भूमि से संबंधित पूरी जानकारी बैठे-बैठे ही मिल जाती है। राजस्व विभाग के एक रजिस्टर में भूमि धारकों के स्वामित्व संबंधी अधिकार, ऋण का बोझ, कृषि भूमि का हस्तांतरण, फसल क्षेत्र आदि जानकारी का समावेश होता है। इनमें गाँव का नमूना नं ७ एवं गाँव का नमूना नं १२ मिलकर 'सातबारा' दस्तावेज़ तैयार होता है। इसीलिए उसे '**सातबारा**' के नाम से जाना जाता है। भूमि एवं राजस्व के प्रबंधन हेतु प्रत्येक गाँव के पटवारी के पास ' गाँव का नमूना' होता है।

'सातबारा' को कैसे पढ़ा जाए ?

- भोगवटदार १ (रैयतदार) का अर्थ है कि यह जमीन परंपरागत रूप से परिवार के स्वामित्व की है।
- भोगवटदार २ का अर्थ है कि यह भूमि अल्पभूधारक अथवा भूमिहीन को दी गई भूमि है। जिलाधीश के अनुमति देने पर ही इस जमीन को बेचना, किराए पर देना, गिरवी रखना, दान करना या इसका हस्तांतरण किया जा सकता है।

- इसके नीचे "आकार" अर्थात भूमि पर लगाया गया कर रुपये/ पैसे में दिया रहता है।
- 'अन्य हक' में संपत्ति पर अधिकार रखने वाले अन्य लोगों के नाम रहते हैं। साथ ही यह भी देख सकते हैं कि संबंधित भूमि पर लिया गया कर्ज चुकाया है कि नहीं ।

संपत्ति पत्र (प्रॉपर्टी कार्ड) :

यदि संपत्ति अकृषि भूमि वर्ग में है तो पंजीकरण संपत्ति पत्र में किया जाता है । स्वामित्व संबंधी अधिकार एवं क्षेत्र (रकबा) दिखाने वाला दस्तावेज नगर-भू अभिलेख विभाग द्वारा दिया जाता है । इसमें नीचे दी गई जानकारी होती है । सिटी सर्वे क्रमांक, अंतिम प्लॉट क्रमांक, कर का मूल्य, संपत्ति का क्षेत्र (रकबा), बँटवारे का अधिकार इत्यादि ।

बताओ तो !

आकृति ६.४ के आधार पर उत्तर दो ।

- कौन-सा भूमि उपयोग वर्ष १९९०-९१ की तुलना में २०१०-११ में कम हो गया है ? उसके पीछे क्या कारण हो सकते हैं ?
- किस भूमि उपयोग में लक्षणीय वृद्धि हुई है? इसका भारत की अर्थव्यवस्था से क्या संबंध हो सकता है ?
- क्या कृषि क्षेत्र में कमी आने का संबंध अन्न की कमी से लग जाया सकता है?

यह हमेशा याद रखो

भूमि-उपयोग पर परिणाम करनेवाले घटक

ग्रामीण भूमि-उपयोग
- जलवायु
- मृदा
- ढाल की प्रकृति
- सिंचाई की सुविधा
- प्राकृतिक संसाधन
- सरकारी नीतियाँ

नगरीय भूमि-उपयोग
- भूमि का स्थान
- प्राकृतिक संसाधन
- गृह निर्माण नीति
- यातायात मार्ग
- औद्योगीकरण
- व्यापार
- खेल का मैदान एवं मनोरंजन की सुविधाएँ
- सरकारी नीतियाँ

देखो होता है क्या ?

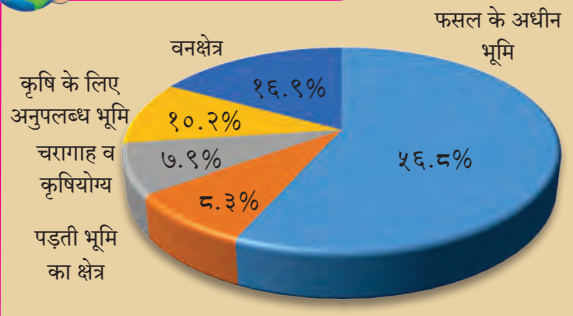

महाराष्ट्र राज्य भूमि-उपयोग २०१०-११

संलग्न आकृति का निरीक्षण कर नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दो :

- कृषि योग्य भूमि कितने प्रतिशत है?
- अनुपजाऊ भूमि कितनी है ?
- महाराष्ट्र की कितने प्रतिशत भूमि वनों के अंतर्गत है?
- महाराष्ट्र में कितने प्रतिशत भूमि कृषि के लिए अनुपलब्ध है ?

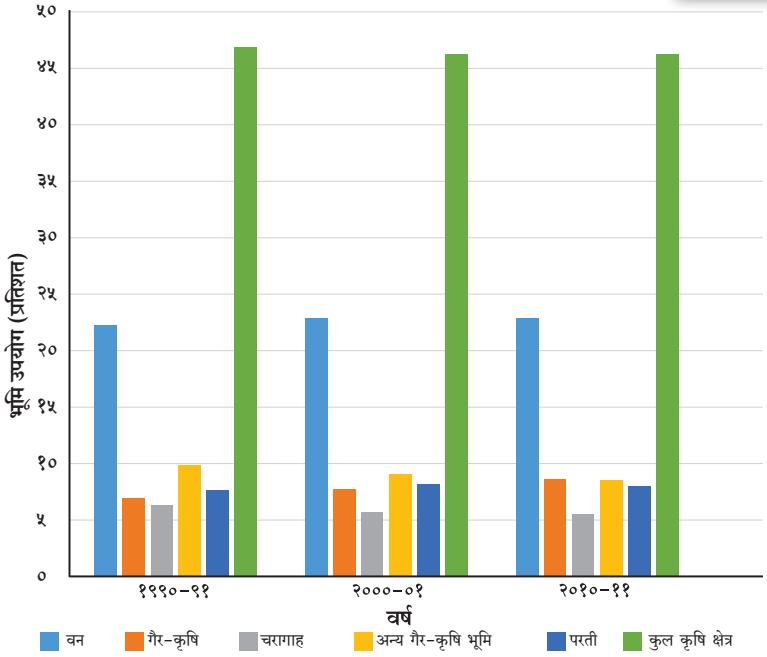

आकृति ६.४ : भारत का सर्वसाधारण भूमि-उपयोग एवं उसमें हुए परिवर्तन (१९९० से २०११)

देखो होता है क्या ?

२००३

२०१०

२०१७

➢ दी गई आकृति में उपग्रहीय प्रतिमाओं के आधार पर गाँव मोंढा (तहसील- हिंगना, जिला – नागपुर) के भूमि उपयोग में समयानुसार किस प्रकार अंतर आया है ढूंढो और कापी में लिखो।

स्वाध्याय

प्रश्न १ नीचे दिए गए कथनों की जाँच करो । अयोग्य कथनों को सुधारो ।

(अ) खनन कार्य भूमि उपयोग का भाग नहीं होता ।

(आ) केंद्रीय व्यावसायिक क्षेत्र में कारखानों का समावेश होता है ।

(इ) नगरीय अधिवासों में सर्वाधिक क्षेत्र निवास कार्य हेतु उपयोग में लाया जाता है ।

(ई) ग्रामसेवक ' सातबारा 'का नमूना उपलब्ध कराता है।

(उ) ग्रामीण भूमि उपयोग में निवासी क्षेत्र के अंतर्गत अधिक भूमि होती है ।

(ऊ) खसरा क्रमांक ७ अधिकार पत्रक है ?

(ए) खसरा क्रमांक १२ परिवर्तन पत्रक है ?

प्रश्न २. भौगोलिक कारण दो ।

(अ) नगरीय भागों में सार्वजनिक क्षेत्र सुविधाओं की अत्यावश्यकता होती है ।

(आ) जिस तरह कृषि भूमि का पंजीयन होता है उसी तरह गैर-कृषि भूमि का भी संपत्ति के रूप में पंजीयन कराया जाता है ।

(इ) भूमि उपयोग के अनुसार किसी प्रदेश का वर्गीकरण विकसित एवं विकासशील में किया जा सकता है।

प्रश्न ३. उत्तर लिखो ।

(अ) ग्रामीण भूमि उपयोग में कृषि भूमि क्यों महत्वपूर्ण है ?

(आ) भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारक बताओ ।

(इ) ग्रामीण एवं नगरीय भूमि उपयोग में अंतर स्पष्ट करो।

(ई) सातबारा एवं संपत्ति पत्र में अंतर स्पष्ट करो ।

उपक्रम :

(अ) अपने गाँव के पास में स्थित शहर के विषय में निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर जानकारी प्राप्त करो और कक्षा में प्रस्तुत करो ।
(स्थान, स्थिति, विकास, भूमि उपयोग का प्रारूप, कार्य)

- अपने अधिवास का वर्गीकरण ग्रामीण अथवा नगरीय में करो।
- अपने अधिवास में केंद्र से लेकर परिधि की ओर भूमि उपयोग में हुए बदलावों के विषय में बड़ों से चर्चा कर टिप्पणी लिखो । उसका प्रारूप तैयार करो।

(आ) अपने घर के सातबारा या संपत्ति पत्रक को पढ़ो और टिप्पणी लिखो ।

***

GUL7KR